

तुम सभी मास्टर पैग्ड्वर या ऐसेन्जर बन जाएं हो। बाप आते हैं पैगाम देने। जो और कोई दै न सके। बाप हो कहेंगे मुझ बाप की याद करो। तुम भी ऐसे समझादेगे। गवर्नर को भी यही समझना है उच्च ते ऊँच है भगवान। उनको याद करने से सुखशान्ति सभी लता है। जप साहब को तो सुख मिले। वह सुख मिलता है आप कल्प। हमको ऊँच ते ऊँच वाप पढ़ाते हैं। वही बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे जन्म-जन्मान्तर के पाप कट जावेगे। यह दुनिया है ही विकारी विषय। महिमा गाई जाती है निर्विकारी की। देवतारं तो पवित्र मि निर्विकारी थे। उनको पूजा करते हैं, याद करते हैं। देवताओं की दुनिया को बायसलेस कहा जाता है। सारी दुनिया के मनुष्य मात्र को कहा जाता है विकारी। 5 तत्त्व भी विकारी हैं। जिसमें शरीर भी विकारी मिलता है। अत्था भी तमोप्रधान तो शरीर भी तमोप्रधान है। तत्त्व भीतमोप्रधान है। सागर भी उछल देती है। इस समय हैरक चीज़ तमोप्रधान है। तुम बच्चे बैठे हो सरा ज्ञान बुधि में है। जानते हो बाप है ज्ञान का सागर। ऊपर से लेकर मूलवतन, सूक्ष्मवतन, स्थूल वतन का, सतयुग-त्रैता, इवापर, कलियुग संगमयुग यह सभी बुधि में हौना चाहिए। और कोई मनुष्य मात्र नहीं जिसके पास यह नालैज हो। जो बाप बच्चों को दे रहे हैं। इस नालैज हो बच्चों को रहना चाहिए। कोई ऐसा मनुष्य नहीं जिसको मूलवतन, सूक्ष्मवतन की याद हो। सतयुग किसकी कहा जाता है यह कोई भी मनुष्य नात्र कोपता नहीं है। तुम बच्चे हो। जानते हो। अभी तुम्हें पृथ्वीतम संगम युग पर हो। आज यहाँ है कल सतयुग में होंगे। जैसे बाप के पास नालैज है वैसे तुम बच्चों के पास भी है। बीज और शारीर इकाइ। 84 जन्मी को यह कहानी कहो, नालैज कहो तुम बच्चों पास है। तुम बच्चे नालैज बैठ और तो लौ समझते हो। पहले 2 यह समझना होता है। यह नालैज रिप्प एक बाप के पास हो है तो बच्चों को देते हैं। यह नालैज और बोई दे नहीं होती। यह ऐस्ट दैत्युभूल नालैज है। धर्म भी ऊँचा है। बाप हो आत्म निर्विकारी देवताबनति है। पर विकारी बनते हैं। बातें बहुत सहज हैं। तुम पैग्ड्वर हो। ऐसेन्ज देना है। ऐसेन्ज है दो अक्षर का। मन्मनाभव-मदयाजोभव। बाप को याद करते 2 हम प्रावन बन जाते हैं। पदार्थ भी यह बड़ी सहज है। 84 चक्र की पदार्थ है। हैबहुत सहज। पर भी नम्बरवारा हर एक पदार्थ में नम्बरदार होते हैं। इस बैहद की पदार्थ में भी नम्बरदार है। जितना पुरुषार्थ बस्ती है उतना ही ऊँच पद पाते हैं। तकदीर में न है तो तदवीर भी क्या कर सकता है। तदवीर करने वाला तो एक रस तदवीर करते हैं। युक्ति बतलाते हैं। कब भी संशय में न आना है। यह बच्च नालैज सिद्धाय एक बाप के कब कोई दे नहीं सकते। मनुष्य से देवता कब कोई लगा न सके। ऐसी पदार्थ की कब छोड़ना नहीं चाहिए। परन्तु भाया छोड़ा देतो है। ब्रह्मक्षमा भाया कशिषा करती है। तो पदार्थ छोड़ देते। तुम पढ़ते हो। एमआवैकट कितनी बड़ी है। पदार्थ दे कब तंग न हौना चाहिए। पदार्थ जरूर पढ़नी है। बाप को जरूर याद करना है। मूल बात है ही प्रावन बनते की। बड़ा ही खोठा बाबा है जो पवित्र बनते हैं। कब कोई भी ज्ञानदार हो ऐन्टर का, आपस पैद्राहभणी है, परन्तु भूल-चूके भी पदार्थ नहीं छोड़नी है। हैबहुत सहज। हम अस्ति हैं बाप पढ़ते हैं। भाया तो आदेंगी परन्तु बात यह परकी रहनी है। बाप को याद करना है जिसे दिकर्म विनाश होंगे। याद से पवित्रता, और चक्र की जाने से चक्रवर्ती राजा बनना है। दैती युण भी धारण करती है। खान-पान पर परहेज। बैण्डव तो व बनना है। लाधारी हालत में क्या करें। याद कर के खाजो। भूख भरने को दरकार ही नहीं। किसकी पैसे दे तो घ्याज विगर भी दे देंगे। आदत न डालेंगे तो भी मिल सकता है। कैले से रोटी, बाजार से दहो लेकर भी खा सकते हों। रोटी पापर से भी खाई जाती है। यह बाप गांव का छौड़ा तो कैले से रोटी खाते थे। युक्ति रखनी है। भूख नहीं मरना है। पर भी बाप को यादकरना है। बाबा जानते हैं बच्चे भूख जाते हैं। भेजन परभी भूख जाते हैं। बाबा खुद भी कहते हैं भूख जाता हूँ। प्रैकटीस चाहिए। बड़ी बात नहीं। बड़े ते

बड़ा पाप है होता है विकार का।

कोई को भी पहले<sup>2</sup> बाप की भाँधना सुनाओ। ऊंचे तै ऊंच है भगवान। फ्रांस की सर्वव्यापी नहां कहा जाता। बच्चों को तो बरसा मिलता है, योग मिलता है। उनको सर्वव्यापी कहना यह तो संग है। कोई कारण पढ़ाई को नहां भूलना है। पढ़ाई तो विल्कुल ही सहज है। पहले-पहले यह सद्वक। बाप की याद करो तौ विकर्म भर्म है। अपन को अस्त्रा समझो। ऐहनत इसमें है। यह ही घड़ी घड़ी भूल जाते हैं। पढ़ाई में जह डिपीवल्ट सेक्यूरिटी होंगी जो इतनाऊंच पद मिलता है। तुम बच्चों के लिए बाप खुद कहते हैं माया का आपैंजीशन है जो भूलती है। अभूल बनना है। बाप कहते हैं अपने व्यवहार में भी रहो। काम-काज करते बाप को याद रखो। अशुक्ल-माशुक छाते-पीते एक दो को याद करते हैं। इसलिए उनका नाम बाला हो गया है। तुम अस्त्रां सभी अच्छे अशुक्ल हो मुझे एक माशुक के। अभी फिला है तो अच्छी रीत याद करना चाहिए। मन्यदा बहुत है। विकर्म दिनाश हो जाते हैं। खुशी बहुत होती है। सभीदुःख दूर हो जाते हैं। अपरपुरी के गैस्टी करते हैं। यहां रहा खुआ(कुंआ) हिसाब चुकुत होता है। वहां तो तुम्हाँ दुःख भी न होगा। नाम ही है सुखधार। जो तो जो मालिक बनते हैं उस बाप को तो याद करनी चाहिए ना। तुम हर 5000 वर्ष बाद यह सद्वक पढ़ते हो। बाप समझते हैं। 184 का चक्र पूरा हुआ अभी यह जाना है। ऐसे<sup>2</sup> अपने से बात करनी होती है। अन्दर में। 184 का चक्र पूरा हुआ। अभी जाते हैं बाबा के पास। बाबा को याद करने से जन्म-जन्मान्तर के पाप भर्म हो जाते हैं। हम स्वदर्शनचक्रधारी भी हैं। यह तुम जानते हो। जो यहां के होंगे देवी सम्प्रदाय। सुर्यवंशी और चन्द्रवंशी वह जह आयेंगे। आगे चल इश्वा कीनूंध चलती रहती है। इश्वा पलैनजनुसर जो कुछ ही रहा है वा व्हे हम करते हैं। विल्कुल इश्वा जनुसर ठीक करते हैं। खबरदार रहना है। तुम पूर्णता बनते हो तो तोई भी पाप नहां करना है। तुम अद्य ही हो पवित्र पूण्यता बनने लिए। यह बहुत सहज है। रिक अटेन्शन देना चाहिए। अपवित्रता है सब से छाराब। पवित्रता है सब से पर्स्ट क्लास क्वालिपीकेशन। तुम पौंडिक्रेवी देवता बनते हो। तुम पवित्र देवी-देवता बनते हो। फिर हो मनुष्य। देवताओं को मनुष्य नहां कहा जाता। मनुष्य से होदेवता बनते हो। तुम्हारे लिए यह सभी बातें हैं। अभी तो तुम मनुष्य से देवता बनते हो। पहले-पहले तुम ब्राह्मण वर्ण में आते हो। दिलवाला मंदिर तुम्हारा स्क्युरेट यादगार है। बोलो हम राजयोग सीखते हैं। मिखलने बाला ऊंच तै ऊंच बाप है। भागीरथ पर आते हैं। वह है जड़-यादगार। यह है चैतन्य। आदीदेव-आदी देवी ही भी है। इनको राजयोग भी कहा जाता है। उपर में है राजाई के चित्र। यह यादगार विल्कुल स्क्युरेट है। नीचे राजयोग की तपस्या है। तुम तपस्या कर रहे हो। बाप को यादकरते हो। यह सभआवजेक्ट है। बन्डर है ना। तुम जानते हो हम देवता बनेंगे। तुम पूछ भी सकते हो। दिलवाला मंदिर दैखा है? हम चैतन्य हैं वह जुड़ हमारा यादगार है। शिव बाबा है ऊंच तै ऊंच। वह बाप हीहम्बी ब्राह्मण बनाकर फिर देवता बनते हो। पढ़ाई से हम यह बनते हो। बात तो विल्कुल सहज है। पढ़ने वाले तो नम्बरदार ही हों। पढ़ाई में कोई तकलीफ होती हो तो वैह द के बाप को लिखना चाहिए। बाप-दादा केर और ब्रह्माकुमारी। कोई कमालन हो, बाप बेता है। बच्चों पर बहुत प्यासहता है जो बच्चे अच्छी रीत चलते हैं। यहां जाते हों तो कहते हैं बच्चों से तंग हो जाते हैं। तंग करते हैं तो प्यास थोड़े ही करते हैं। इसमें भी ऐसे हैं छारब हो पड़ते हैं। ब्राह्मणों को लिख देंगे यह छी छो है। रहम दिल बाप कहते हैं। फिर भी कहां जायेंगे। लिखवा लो। यह किया है तोबा भरता हूं फिर ऐसी कड़ी हार नहां लाउंगा। बहुत बच्चे हार खा लेते हैं। इसकै कहा जाता है हर औत का खेल। बाप है तब लड़ाई शुरू हो जाती है माया की। अच्छा गोठे<sup>2</sup> स्थानी बच्चों को स्थानी बाप दादा का गाद प्यास गुडनाईट। स्थानी बच्चों को स्थानी बाप का नपस्ने।